धन की निकासी

तात्पर्य या अर्थ - यूरोप में धन निकासी की अवधारणा वाणिज्यवादी सोच के क्रम में विकसित हुई तथा इसका तात्पर्य था - प्रतिकूल व्यापार संतुलन के कारण किसी भी देश से कीमती धातु का पलायन, किन्तु भारत के सन्दर्भ में धन की निकासी का तात्पर्य है आयात की तुलना में निर्यात अधिक, कर भारत से बाहर अतिरिक्त रकम का स्थानांतरण।

उद्भव - एक व्यापारिक कंपनी के रूप में ईस्ट इंडिया कम्पनी को भारतीय व्यापार के संचालन के लिये बड़ी मात्रा में ब्रिटेन से कीमती धातु लानी होती थी, परन्तु ब्रिटिश सरकार द्वारा निरंतर इस नीति का विरोध किया जा रहा था। अंततः प्लासी तथा बक्सर युद्ध की विजय के उपरांत कम्पनी एक राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित हुई तथा कम्पनी को बंगाल की दीवानी प्राप्त हुई। तदुपरांत कम्पनी (1) अन्तर्देशीय व्यापार से प्राप्त लाभ (2) बंगाल की लूट से प्राप्त धन तथा (3) बंगाल के राजस्व का एक भाग, भारतीय वस्तुओं की खरीद में निवेशित करने लगी। इसे निवेश के नाम से जाना गया। यहीं से धन की निकासी का आरंभ हुआ। दूसरे शब्दों में अब रकम भी भारत की तथा वस्तु भी भारत की। फिर इन वस्तुओं का भारत से बाहर निर्यात किया गया तथा इसका मुनाफा कम्पनी के शेयरधारकों को मिला। भारतीय इससे वंचित रहे। बंगाल की दीवानी प्राप्त होने के पश्चात कम्पनी ने ब्रिटेन से आयात की जाने वाली कीमती धातु की मात्रा भी कम कर दी। इस प्रकार बड़ी मात्रा में वस्तुओं के रूप में भारत से ब्रिटेन की ओर धन का पलायन हुआ।

धन की निकासी का विस्तार अथवा विकास - इस प्रकार कम्पनी ने निरंतर राजस्व खाते से प्राप्त रकम का व्यापारिक खाते में उपयोग किया। यह स्थिति 1813 तक बनी रही। फिर 1813 के चार्टर अधिनियम के आधार पर कम्पनी के राजस्व खाते एवं व्यापारिक खाते दोनों अलग-अलग हो गये। अतः 1813 के बाद धन की निकासी ने अप्रतिफलित लाभ का रूप ले लिया। धन की निकासी का अध्ययन उपनिवेशवाद के तीन भिन्न चरणों में बाँटकर किया जा सकता है -

प्रथम चरण में वस्तुओं के रूप में भारत से ब्रिटेन की ओर धन का पलायन होता रहा।

द्वितीय चरण में भारत का दरवाजा ब्रिटिश वस्तुओं के लिये खोला दिया गया। इस चरण में भारत तैयार माल का आयातक तथा कच्चे माल का निर्यातक बन गया। अपना व्यापारिक एकाधिकार खोने के पश्चात कम्पनी को अपने शेयरधारकों के लिये मुनाफे की समस्या उपस्थित हुई। कम्पनी ने आरंभ में इस समस्या का निराकरण भारत से कपास तथा नील के निर्यात के द्वारा करने का प्रयास किया किन्तु दासों के उत्पादन पर आधारित अमेरिकी कपास तथा सस्ते श्रम पर आधारित कैरेबियाई द्वीप द्वारा उत्पादित नील के साथ प्रतिस्पर्धा करने में ईस्ट इंडिया कम्पनी विफल हो गयी। अतः इसके समस्या के निराकरण के लिये चीन में अफीम निर्यात को प्रोत्साहन दिया। वस्तुतः

Scanned by CamScanner

कम्पनी चीन से रेशम और चाय प्राप्त कर ब्रिटेन एवं यूरोप में निर्यात करती थी इसके बदले उसे कीमती धातु देना पड़ता था। किंतु अब उसने चीनी उत्पाद का मूल्य भारतीय अफीम से चुकाना आरंभ किया। इस प्रकार भारत - चीन एवं ब्रिटेन के बीच एक त्रिकोणीय व्यापारिक संबंध कायम हुआ। वस्तुतः चीन के साथ अफीम व्यापार चीनी लोगों के स्वास्थ्य के लिये जितनी हानिकारक थी, ब्रिटिश व्यापार के लिये उतनी ही लाभदायक। यही वजह है कि चीन के विरोध के बावजूद भी कम्पनी ने इस व्यापार को जारी रखा और जब जरूरत पड़ी तो उसने चीन पर दो अफीम युद्ध थोप दिये।

तृतीय चरण → 19 वी सदी के उत्तरार्द्ध से भारत से ब्रिटेन की ओर गृहव्यय के रूप में एक बड़ी रकम दस्तांतरित होने लगी। गृहव्यय वह रकम थी जो भारत की सरकार प्रत्येक वर्ष भारत से ब्रिटेन की ओर दस्तांतरित करती थी। यह दस्तांतरण भारत सचिव के आफिस के माध्यम से होता था। गृहव्यय में कई मदें शामिल थी। यथा, रेलवे पर प्रत्याभूत ब्याज, सरकारी ऋण पर ब्याज, भारत से सेवानिवृत ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन, ब्रिटेन में भारत के लिये की गई सैनिक खरीददारी, सैनिक प्रशिक्षण का खर्च आदि शामिल थे।

प्रभाव :-

① भारत के दरिद्रीकरण का मार्ग प्रशस्त हो गया।

② चूँकि ब्रिटिश को बंगाल से प्राप्त राजस्व के द्वारा भारतीय वस्तुओं की खरीद करना संभव हुआ। इसलिये कम्पनी ने ब्रिटेन से चाँदी का आयात बहुत ही कम कर दिया। इसके कारण 1770 के दशक में भारत में चाँदी की मुद्रा की कमी पड़ने लगी

③ गृहव्यय की राशि को पूरा करने के लिये किसानों पर अत्यधिक कर लगाया गया। इसके कारण किसानों की क्रयशक्ति कम हो गई।

④ धन निकासी के कारण भारत में निवेश में निवेश के लिये धन की कमी पड़ गई। अतः भारत में न केवल आर्थिक विकास अवरुद्ध हुआ वरन् मानव शक्ति का विकास भी दुष्प्रभावित हुआ। → स्वास्थ्य शिक्षण आदि sector पर निवेश नहीं।

Scanned by CamScanner

धन की निकासी की अवधारणा का परीक्षण -

राष्ट्रवादी - ~~राष्ट्रवादी~~ दादा भाई नौरोजी ने गंभीरता से धन निकासी के मुद्दे को उठाया तथा "Poverty and Unbritish rule in India" - नामक निबन्ध में उन्होंने धन निकासी की अवधारणा की क्रमबद्ध व्याख्या की। तदुपरांत आर० सी० दत्त ने अपने ग्रंथ "The Economic History of India" में इस तथ्य को विस्तार से रखा। एम० जी० रानाडे के द्वारा भी धन निकासी के तथ्यों की पुष्टि की गई। ये विचारक राष्ट्रवादी चिंतक कहलाते हैं। यद्यपि ये आर्थिक विशेषज्ञ अथवा अर्थशास्त्री नहीं थे किन्तु इन्होंने औपनिवेशिक अर्थतन्त्र की बड़ी ही सटीक व्याख्या प्रस्तुत की। इनके द्वारा यह निश्चित करने का प्रयास किया गया कि भारत से एक निश्चित राशि प्रतिवर्ष ब्रिटेन की ओर हस्तांतरित ~~की जाती~~ हुई। इनके विचार में इस निकासी का कुप्रभाव सम्पूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था पर महसूस किया गया। इसके कारण भारत में पूंजी का संचय नहीं हो सका तथा ब्रिटेन से जो पूंजी भारत में लाई गई वह भारत से निकासी की गई पूंजी का एक छोटा अंश थी। अगर यह पूंजी स्वयं भारत में निवेशित की गई होती तो भारत का भी विकास होता तथा भारत पूंजीवादी रूपान्तरण की प्रक्रिया से गुजरता। फिर भारत में अनावश्यक रूप से रेलवे का विकास किया गया जबकि सिंचाई व्यवस्था पिछड़ गई। गृहव्यय के रूप में भारत से एक बड़ी राशि का ब्रिटेन की ओर हस्तांतरण होता रहा। यह रकम भारत के राजस्व खाते से पूरी की गई। अतः किसानों पर कर का अधिभार अत्यधिक बढ़ गया। उनका यह भी मानना था कि भारत की नौकरशाही में बड़ी संख्या में अंग्रेजों को शामिल किया गया जिसके कारण वेतन तथा पेंशन के रूप में भी भारत से एक बड़ी रकम हस्तांतरित होती रही।

साम्राज्यवादी → आगे मॉरिसन तथा बेरास्टेट जैसे ब्रिटिश पश्चात्य विद्वानों ने धन की निकासी की अवधारणा को अस्वीकार किया। उनके विचार में — ~~प्रथम~~

प्रथम, गृहव्यय की राशि अधिक नहीं थी

दूसरे, भारत के विकास के लिये वह राशि आवश्यक थी। उनका यह भी मानना है कि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा बाजार से जितनी सस्ती दर पर पूंजी भारत को उपलब्ध ~~क~~ कराई गई वह स्वतन्त्र भारत की सरकार के लिये भी संभव नहीं होती। फिर ब्रिटिश पूंजी के माध्यम से भारत में रेलवे, बागान उद्योग आदि का विकास हुआ तथा भारत का आधुनिकीकरण हुआ। सक्षम ब्रिटिश अधिकारियों के द्वारा भारत में अच्छी सरकार स्थापित की गई।

नवउदारवादी → उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त हाल ही में नवउदारवादी समूह से जुड़े हुए कुछ विद्वानों ने भी धन की निकासी की अवधारणा को अस्वीकार करने का प्रयत्न किया है। उदाहरण के लिये हाल में एक विद्वान के० एन० चौधरी ने इस बात पर जोर दिया है कि गृहव्यय की राशि भारतीय राजस्व का मात्र 1.5% थी। अतः इसके प्रभाव को अधिक करके नहीं आँकना चाहिये।

निष्कर्ष - यहाँ साम्राज्यवादी तथा नवउदारवादी दृष्टिकोण को स्वीकार करना कठिन प्रतीत होता है। यद्यपि यह सही है कि राष्ट्रवादी चिंतकों ने कुछ हद तक तथ्यों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त वे औपनिवेशिक अवधारणा के सम्पूर्ण आयामों को समझने में भी चूक जाते हैं। किन्तु उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद राष्ट्रवादी लेखकों के निष्कर्ष का अपना महत्व है जो आगे के राष्ट्रीय आन्दोलन में स्पष्ट परिलक्षित होता है।

Scanned by CamScanner

~~धन की निकासी की अवधारणा एवं आलोचना~~

औपनिवेशिक अर्थतन्त्र की समझ को विकसित करने में धन की निकासी की अवधारणा के महत्व को दर्शाइये -)

→ विदेशी शासन तथा औपनिवेशिक शासन की दूरी को समाप्त करने में धन की निकासी की अवधारणा की अहम भूमिका रही है। ब्रिटिश विचारक इस बात पर बल दे रहे थे कि भारत में ब्रिटिश शासन एक विदेशी शासन था किन्तु औपनिवेशिक शासन नहीं क्योंकि यह भारतीयों के लाभ तथा भारत के विकास के लिये अपनी सत्ता था। किन्तु धन की निकासी की अवधारणा ने ब्रिटिश शासन के औपनिवेशिक चरित्र को उजागर कर दिया तथा यह सिद्ध कर दिया कि ब्रिटिश शासन निरंतर गंगा नदी से संसाधनों को सोखकर टेम्स नदी पर उड़ेलता रहा।

→ दादा भाई नैरोजी आर. सी. दत्त, एम. जी. राणाडे आदि ने धन की निकासी की अवधारणा की प्रमुख व्याख्या प्रस्तुत की। आगे इनके दृष्टिकोण को मार्क्सवादी लेखकों ने और भी अधिक विकसित किया तथा इन लेखकों ने ब्रिटिश और अंग्रेजितिश के बीच की दूरी को समाप्त कर दिया।

→ धन की निकासी की अवधारणा ने "आर्थिक राष्ट्रवाद" को बल प्रदान किया तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की राजनीति को एक नई दिशा दी। फिर चाहे उदारवादी चरण हो, उग्रवादी चरण हो या फिर गांधीवादी चरण, सभी में धन की निकासी की अवधारणा राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रेरणा बनी रही।

→ औपनिवेशिक शासन के औचित्य पर ही प्रश्नचिह्न लगा और ब्रिटिश शासन को अपने शासन की वैधता को आधार प्रदान करने के लिये एक नया मुद्दा - अल्पसंख्यकों की सुरक्षा - के रूप में बनना पड़ा।

Scanned by CamScanner